Swami Dayananda Saraswati

4TH ANNIVERSARY
VARSHIKOTSAVA SPECIAL

Vaidic Dhwani

QUARTERLY NEWSLETTER OF ARYA SAMAJ INDIRANAGAR

VOL 4 # 4 | EDITION 16 | OCTOBER-DECEMBER 2013

हम सन्मार्ग से न हटें

मा प्र गाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः ।
मान्तः स्थुर्नो अरातयः ॥

–ऋ० १०।५७।१; अथर्व० १३।१।५९

हे परमेश्वर ! हम सन्मार्ग को छोड़कर मत चलें, ऐश्वर्ययुक्त होते हुए हम यज्ञ को छोड़कर मत चलें । अदान भाव हमारे अन्दर न ठहरें ।

– आचार्य अभयदेव

O resplendent Lord, let us not depart from the righteous path, nor from the path of noble actions; let no malignity or miserliness dwell within us.

– Swami Satya Prakash Saraswati
Satyakam Vidyalankar

This special edition is dedicated to the cherished memory of Shri Omprakash Ochani Ji

(Look for invocation of this Mantra on the next page)

Arya Samaj For Vaidic Dharma

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
Krinvanto Vishvam Aryam
Make this world noble

CONTENTS

Invocation 2
जीवन का लक्ष्य 3
सन्तान के जीवन-निर्माण में 5
Events 7
Pravachans 7
Vaidikotsav 8
Think, Consume & Do Not Hoard 10
कर्म-ज्ञान 11
Vedic Living in the 21st Century 12
Thank You God for Everything! 15

INVOCATION

हे इन्द्र, परमैश्वर्यवान् ! हम तुमसे ऐश्वर्य नहीं माँगते । हमारी तुमसे याचना तो यह है कि हम सदा सन्मार्ग पर चलते जाएँ, इसको कभी न छोड़ें । सन्मार्ग पर चलते हुए हमें जो कुछ ऐश्वर्य मिलेगा वही सच्चा ऐश्वर्य होगा । जिस किसी तरह मिला हुआ 'ऐश्वर्य ' ऐश्वर्य नहीं होता–उसमें ईश्वरत्व नहीं होता–सामर्थ्य नहीं होता । सन्मार्ग से जो कुछ ऐश्वर्य मुझे मिलेगा, उस ऐश्वर्य को तुझसे पाकर हे इन्द्र ! मेरी प्रार्थना है कि यज्ञ से कभी विचलित न होऊँ । यज्ञ करता हुआ–उपकार करता हुआ ही मैं उस तेरे दिये ऐश्वर्य को भोगूँ । जो कुछ तुम्हारे द्वारा (तुम्हारे देवों द्वारा) मुझे मिला है, उसे तुम्हें (देवों को) बिना दिये भोगना चोरी है । ऐसा पाप स्वार्थवश हम कभी न करें । यज्ञ को, आत्म–त्याग को, परार्थ में आत्म–विसर्जन को हम कभी न भूलें । यज्ञ के बिना भोग भोगना विषपान करना है, अतः हमारी दूसरी प्रार्थना है कि हम यज्ञ को कभी न छोड़ें ।

हमारी तुमसे यह प्रार्थना नहीं है कि तुम हमारे शत्रुओं का नाश कर दो । हमारी याचना तो यह है कि हमारे अपने अन्दर 'अराति ' न ठहरें । हमारे अन्दर अराति न हो तो बाहर हमारा अराति कोई कैसे हो सकता है ! अराति अर्थात् अदान–भाव हमारे अन्दर क्षण–भर के लिए न आये । अदान–भाव होते हुए यज्ञ असम्भव है, अतः हमारा एकमात्र शत्रु अदान–भाव ही है । यह अन्दर का शत्रु ही हमारा शत्रु है । हे प्रभो ! इससे हमारी रक्षा करो । फिर बाहर के किसी शत्रु की हमें परवाह नहीं ।

– आचार्य अभयदेव

Editorial

Come the month of October and the air of festivities is felt in every heart. The approaching festivals of Navratri, Dushera and then the festival of lights i.e. Deepawali, all create an aura of lights. This outer illumination is only symbolic. It is the inner illumination which is important. The opening verse of Samveda -

ओ३म् अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये । नि होता सत्सि बर्हिषि ॥

साम० पूर्वा० प्रापा १, मन्त्र १ ॥

exhorts us to pray to the Almighty God to enlighten us from within. The inner awakening would help us to inculcate all noble and good qualities, which once enshrined within, would brighten up the whole personality of the individual. The soul made pure and the heart filled with virtues would leave no room for the vices. All this is possible only when we make our heart and soul the seat of the Almighty God. For this we have to make efforts - sincere efforts. Total dedication to Him would enable us to do Stuti, Prarthana and Upasana. Just as the oblations of ghee, samagree, kesar, dry fruits and all other nice things in the Agnihotra help to purify the environment, the spiritual Agnihotra would help us glow from within, thus showing us the right path of enlightenment. Once we succeed in attaining this stage, the artificial brightness of electrical lamps will lose all its shimmer. So, let us pledge on this approaching festival of lights to attain that knowledge and inner brightness, which excels everything else. Astu!

Since this issue has been delayed due to unavoidable reasons and now it will reach in January 2014. So, wish you all very Happy New Year!

– Harsh Chawla

जीवन का लक्ष्य

– डॉ. महेश विद्यालंकार

सृष्टि की प्रत्येक वस्तु उद्देश्यपूर्ण है । संसार में कोई भी चीज बिना प्रयोजन के नहीं बनी है । सभी चीजों का उपयोग तथा प्रयोजन है । मनुष्य परमात्मा की सर्वोत्तम कृति है । अतः इसका भी कोई विशेष लक्ष्य होना चाहिए । मानव योनि ही ऐसी है, जिसमें रहता हुआ जीव इहलोक और परलोक दोनों को सिद्ध कर सकता है । यही वह योनि है, जिसमें जीव मुक्ति पाने का अधिकारी बनता है, जबकि दूसरी योनियों में जीव सामान्य बुद्धि से केवल कर्मफल भोगता है । वेद, दर्शन, उपनिषद् आदि धर्मग्रन्थ तथा भारतीय संस्कृति मानव–जीवन के उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति मानते हैं । इसी कारण प्रतिदिन सन्ध्या में हम ईश्वर प्रार्थना करते हैं–

'हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः ।।'

अर्थात् "हे ईश्वर ! धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की हमें शीघ्र प्राप्ति हो ।" भारतीय चिन्तन में धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष को पुरुषार्थ चतुष्ट्य कहा गया है । इन्हीं चारों के द्वारा जीवन पूर्णता को प्राप्त करता है । जीवन के चारों पुरुषार्थों में सुख, भोग, भौतिकता, सांसारिकता, शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा, परमात्मा सभी कुछ आ जाता है । इन चारों पुरुषार्थों में लोक तथा परलोक दोनों का समावेश है । जीवन की यात्रा धर्म से आरम्भ होकर मोक्ष की प्राप्ति में पूर्णता पाती है । धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष के द्वारा शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा को शान्ति व पूर्णता मिलती है । इसके बिना जीवन अधूरा रहता है । मनुष्य जीवन की सार्थकता तथा सफलता चारों की प्राप्ति में ही है । चारों का महत्व, आकर्षण व विशेषताएँ हैं । अर्थ और काम का सम्बन्ध शरीर, इन्द्रिय, मन तथा भौतिक जगत् से है । धर्म एवं मोक्ष की संगति आत्मा, परमात्मा, मुक्ति और परमार्थ आदि से है । हमें धर्म से आरम्भ करके मोक्ष तक पहुँचना है । प्रेरक शब्दों में कहा गया है–

श्वास–श्वास में प्रभु को बोल, वृथा जन्म मत खोय । क्या जाने इस श्वास का, बहुरि आवन होय न होय ।।

जीवात्मा का लक्ष्य प्रभु–सान्निध्य और मोक्ष पाना है । यह मानव शरीर, आत्मदर्शन और परमात्मदर्शन हेतु मिला है । मानव के हृदयमन्दिर में ही प्रभु के आनन्द की अनुभूति होती है । मुक्ति का द्वार इसी मानव–योनि में खुलता है । मृत्यु से अमरत्व की प्राप्ति इसी जीवन में सम्भव है । जब तक जीवन अपने परम लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक वह आवागमन के अनन्त चक्करों से नहीं छूट पाता है । उपनिषद् कहता है– **न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः ।**

यदि मानव जीवन पाकर भी अपने को और परमात्मा को नहीं जाना, तो इससे बढ़कर महाविनाश व हानि और कुछ नहीं है । आम आदमी को जीवन के लक्ष्य का बोध ही नहीं है । इनके लिए तो कमाया, खाया, पिया और सो गए । सवेरे उठे और काम–धन्धों में चल पड़े । पशुओं के समान आहार, निद्रा, भय और मैथुन में ही जीवन गुजार दिया । केवल नरतन धारण कर लेना ही मानव–जीवन की सार्थकता और सफलता नहीं है–

'रात गँवाई सोयकर, दिवस गँवायो खाय । हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदले जाय ।।'

क्या कभी विचार किया कि "हम क्यों जीते हैं ? जीवन का क्या प्रयोजन है ? इसकी अन्तिम मंजिल क्या है ?" बहुत से

लोग जीते है, मगर उन्हें जीवन के महत्त्व और उद्देश्य का बोध नहीं है । संसार में हम क्यों आते-जाते हैं ? इतनी ऊँची मानव पदवी क्यों मिली है ? कवि प्रेरक शब्दों में कह रहा है-

कुछ तो समय निकाल आत्मशुद्धि के लिये । नरतन का उद्देश्य न केवल विलास है ।।

जीवन को सुन्दर व उद्देश्यपूर्ण ढंग से जीने में ही जीवन का महत्त्व और उपयोगिता है । अधिकांश लोगों को यह मालूम ही नहीं है कि "यह हीरा जन्म किसलिए मिला है ? इसका क्या उद्देश्य है ? कहाँ से आये हैं ? कहाँ जाना है ? क्या कर्तव्य है ? क्या धर्म है ? कैसे दुनिया में जीना है ? कैसे मानव चोले को बेदाग बनाये रखें ? कैसे सुख-शान्ति, प्रसन्नता एवं नीरोगता से जीवन-यात्रा पूर्ण करें ? और अपने कर्त्तव्य कर्म करते हुए प्रभु सान्निध्य को प्राप्त करें ? कैसे मोक्ष तक पहुँचें ?" मार्मिक शब्दों में कवि ने जीवन के लक्ष्य की प्रेरणा दी है-

आना जाना,बन्धु जाना, कुटुम्ब कबीला जाना,सब कुछ जाना ।

फिर कुछ भी न जाना, उसको न जाना, जिसके पास है जाना ।।

मनुष्य संसार की चीजों तथा भोगपदार्थों के बारे में बहुत कुछ जानता है । इसे चालाकी, दुनियादारी, तिकड़म, हेराफेरी तथा गलत बातों की गहरी जानकारी है । बहुत से लोगों का भौतिक सांसारिक पक्ष बड़ा सफल होता है, मगर उनका आध्यात्मिक पक्ष उतना ही कमजोर होता है; उन्हें आत्मा-परमात्मा और जीवनलक्ष्य के बारे में कुछ भी मालूम नहीं होता है । यह जीवन बड़ी तेजी से बातों ही बातों में बीता जा रहा है । जो जीवन का सारतत्व आत्मा और परमात्मा हैं, उनकी इन्हें कोई चिन्ता नहीं है । हम संसारी लोग शरीर से प्यार करते हैं, आत्मा से कोई प्यार नहीं करता है । देह के लिए सब कुछ करते हैं, परन्त आत्मा की न सोचते है और न उसके लिए कुछ करते हैं । प्रातः से सांय तक भागदौड़, कामकाज, धन-संग्रह आदि शरीर के लिए ही हो रहा है । आत्मा और परमात्मा के लिए तो दो घड़ी तक नहीं निकाल पा रहे हैं । आत्मा के संयोग से ही शरीर में चेतनता व पवित्रता है । इस संयोग के न रहने पर शरीर में बदबू व विकृति आने लगती है । आत्मा की सत्ता का बोध तब होता है, जब मृत शरीर भूमि पर पड़ा रह जाता है और उसे घर से निकालने की शीघ्रता की जाती है । शरीर प्रकृति के तत्वों से बना है । परमात्मा सर्वव्यापक होने से शरीर में भी है, परन्तु शरीर का अपना चेतन तत्व निकल जाने के कारण शरीर जड़ हो जाता है । देह और परमात्मा दोनों हैं, पर तीसरी चीज आत्मा मृत शरीर में नहीं है । इसी कारण शरीर मृत कहलाता है । इसी चेतन तत्व को आत्मा की संज्ञा दी गई है । आत्मा ही शरीर को गति देता है । अतः आत्मतत्व को तो सभी को मानना ही पड़ता है, क्योंकि शरीर का आधार आत्मा ही है । आत्मा से शरीर का महत्व, आकर्षण व मूल्य है । आत्मा ही शरीर का असली राजा और स्वामी है ।

SHRADDHANJALI

Shri Om Prakash Ochani

25 Oct 1952 - 01 Oct 2013

Treasurer, Arya Samaj Mandir
Member, Arya Samaj Trust
Business Partner, Concord Cabs

Shri Om Prakash Ochani was a sincere, honest, loyal and hard working luminary who dedicated his life for the propagation of vedic principles as embodied by the Arya Samaj.

We, the members of Arya Samaj Indiranagar, place on record, our deepest sympathy and pray for the departed soul. We offer our condolences to the members of his family to bear this irreparable loss. May his soul rest in peace.

सन्तान के जीवन–निर्माण में माता–पिता की भूमिका

–डॉ० अरुण देव शर्मा

जिसकी कोख से हमारा जन्म होता है, जो अपने रक्त की बूंद–बूंद से दर्द सहकर हमें गर्भ में सींचती है और जन्मोपरान्त हमारी प्रतिक्षण रक्षा करके हमें एक–एक दिन बड़ा करती है, यह महान् कार्य इस संसार में माँ ही करती है । माँ अपनी इन्हीं महत्ताओं के कारण देवी, पूज्या और श्रद्धेया है । माँ से बढ़कर उपकारी कोई दूसरा नहीं है । माँ हमें जीवन प्रदान करके समर्थ बनाती है । माँ की महिमा को शतपथकार अपने शास्त्र में इस प्रकार स्वीकार करते हैं –

'मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद'। (शतपथ ब्राह्मण १४,५,८,२ व छा० उ० ६,१४) ।

अर्थात् जब तीन उत्तम शिक्षक – एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य हो तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है । **महर्षि दयानन्द** ने उसी माँ को धन्य माना है जो सन्तान की कामना से गर्भ धारण करती हो तथा जो शान्ति, विद्या, बुद्धि आदि गुणों से सुशोभित हो ।

माँ की भावनाओं का बालमन पर सबसे प्रथम व अधिक प्रभाव पड़ता है । शैशव व बाल अवस्था में सन्तान का मन कोरी सलेट के समान स्वच्छ व निर्मल होता है । माँ अपने उत्तम गुणों को बच्चों में सहज ही प्रविष्ट करा सकती है । इसीलिए माँ को मनुष्य की प्रथम गुरु, निर्मात्री कहा गया है – '**माता निर्माता** भवति'। माँ से बढ़कर कोई सुखदायी और आश्रय नहीं होता तथा माँ पृथ्वी से भी अधिक सहनशील होती है, ऐसा महाभारत में कहा गया है –

'न हि मातृ समा छाया,' 'न हि मातृ समं सुखम् ।' 'माता गुरुतरा भूमे ।'

प्राचीन वैदिक शास्त्रो में भी माँ को देवों में प्रथम स्थान पर पूज्या माना गया है – मातृदेवो भव । पितृदेवो भव । आचार्य देवो भव । अतिथि देवो भव ॥ (तैतिरीय आ० ७,११) धन्य वह माता है कि जो गर्भधारण से लेकर जब तक पूरी शिक्षा व विद्या न हो तब तक विनम्रता व सुचरित्र का उपदेश करे । माँ परिवार व समाज के निर्माण में एक सबसे पहली महत्त्वपूर्ण इकाई के रूप में अपना योगदान देती है । महर्षि मनु ने माँ के पद की महिमा को इस प्रकार कहा है –

उपाध्यायान्दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता । सहस्रं तु पितृन्माता गौरवेणातिरिच्यते ॥ (मनु० २, १२०)

अर्थात् दश उपाध्यायों की अपेक्षा एक आचार्य, सौ आचार्यों की अपेक्षा पिता और हजारों पिताओं की अपेक्षा माता गौरव में अधिक है ।

यं मातापितरौ क्लेशं सहेते संभवे नृणाम् ।
न तस्य निष्कृतिः शक्या कर्तुं वर्षशतैरपि ॥

(मनु० २, २२६)

सन्तान को जन्म देने और उसको पालने में माता-पिता जो-जो कष्ट सहते हैं, उसका प्रत्युपकार सन्तान सैकड़ों वर्षों में भी नहीं चुका सकती । महर्षि वाल्मीकि ने इसका चित्रण इस प्रकार किया है-

आस्तां तावदियं प्रसूतिसमये दुर्वारशूलव्यथा, नैरुच्ये तनुशोषणं मलमयी शय्या च सांवत्सरी ।

एकस्यापि न कष्ट-भार-भरण-क्लेशस्य यस्याः क्षमो, दातुं निष्कृतिमुन्नतोऽपि तनयस्तस्यै जनन्यै नमः ॥

(वाल्मीकि रामायण, अयोध्या. १८,१५,१६)

माँ के कितने उपकार हैं- प्रसव के समय माँ को जो दुर्वारणीय वेदना भरी पीड़ा होती है उसके वर्णन को तो रहने ही दीजिये । गर्भावस्था में बहुत समय तक जब माँ को खाने-पीने में अरुचि हो जाती है, तब उसका शरीर सूख जाता है क्योंकि गर्भ तो तब भी मातृशरीर से पोषण लेता ही रहता है । सन्तान को जन्म देने के बाद कम से कम एक वर्ष तक तो सन्तान के मलमूत्र से युक्त शय्या पर भी माँ को सोना पड़ता है । सन्तान कितना भी बड़ा हो जाये, किन्तु जिस माँ के द्वारा झेले गये भारी कष्टों की पीड़ाओं में से एक का भी बदला वह नहीं चुका सकता, उस माँ को प्रणाम है ।

पाणिनि व्याकरणानुसार **'माङ्माने शब्दे च'** धातु से माता शब्द बनता है, **'यो मिमीते मानयति सर्वाञ्पुत्रान् च माता'** अर्थात् जो पूर्णकृपायुक्त होकर अपनी सन्तानों का सुख और उन्नति चाहती है, इससे जननी **'माता'** कहलाती है ।

वैदिक शिक्षा के अभाव के कारण वर्त्तमान समय में प्रायः माता-पिता में मातृत्व और पितृत्व के पर्याप्त गुणों की भी न्यूनता हो गयी है जिससे समाज में दिव्य महापुरुषों व आदर्श देवियों की भी दुर्लभता है । प्रायः वैवाहिक-जीवन से अनभिज्ञ स्त्री-पुरुष स्वार्थ, अज्ञान, शोषण, घरेलू-हिंसा, पक्षपात, अभिमान आदि से युक्त होकर जी रहे हैं, जिससे दुःख बढ़ाकर सुख की हानि में लगे हुए हैं । बिना सही शिक्षा और सत्य उपदेश के सभी सम्बन्धों में सुधार असम्भव है । अतः वैवाहिक जीवन की सफलता का आधार सत्य शाश्वत वैदिक-शिक्षा ही है । जो कि सार्वकालिक, सार्वभौमिक और सबके लिए सहज ही ग्रहण करने योग्य है । महर्षि मनु ने एक श्लोक लिखा है-

आचार्यो ब्रह्मणो मूर्त्तिः पिता मूर्त्ति प्रजापतेः । माता पृथिव्या मूर्त्तिरस्तु भ्राता स्वो मूर्त्तिरात्मनः ॥

(मनु० २, २२६)

अर्थात् विद्यार्थी को ब्रह्म के ज्ञान-विज्ञान आदि गुण जिस देव प्रतिमा में उतरते हैं, उस शिक्षक का, आचार्य का, पालक पिता का, पृथ्वी-तुल्य धैर्यवती, सहनशीलता की मूर्त्ति माता का तथा आत्म-स्वरूप भ्राता का आदर-सत्कार करना चाहिए, इनका अपमान नहीं करना चाहिए । माता-पिता, शिक्षक तथा भाई-बहनों एवं सम्बन्धियों को चाहिए कि वे सब अत्यन्त कृपा-युक्त होकर ज्ञान, विवेक, प्रेम, करुणा, सत्य, सरलता, सहनशीलता, उदारता से युक्त होकर आत्म-तुल्य समझकर अपनी सन्तान के जीवन का निर्माण करें । उनमें परमात्मा, रक्षक, पृथ्वी और देवी-देवता व महापुरुषों के आदर्श गुण-कर्म-स्वभाव हों । बिना उत्तम एवं आदर्श ज्ञान, कर्म एवं व्यवहार के सन्तान के व्यक्तित्त्व का सर्वांगीण विकास नहीं होता । सन्तान जब बोलने लगती है तब पिता की शिक्षा का मुख्यतः प्रारम्भ होता है । माता-पिता की दिनचर्या, आपसी बोलचाल, चाल-चलन तथा चरित्र का बालक-बालिका पर अमिट प्रभाव पड़ता है । अतएव माता-पिता तथा शिक्षकों को अपनी सभी क्रिया-प्रतिक्रिया आदि के प्रति सजग, सावधान या जागरुक होना चाहिए । बड़ों को बच्चों के सम्मुख कभी अपशब्दों का प्रयोग और कोई भी कुचेष्टा, बहस या मारपीट नहीं करनी चाहिए । क्योंकि बच्चे सबसे अधिक अपने बड़ों से ही जीने के ढंग सीखते हैं ।

जो माता-पिता-अध्यापक आदि बच्चों के सामने व परोक्ष में भी आदर्श-व्यवहार करते हैं उनके जीवन सबके लिए अनुकरणीय बन जाते हैं । हम अपने बच्चों के, परिवार व समाज के साथ जीवन जीते हुए शाकाहार, सन्ध्योपासना, यज्ञ, दान, सेवा, परोपकार, स्वाध्याय एवं सद्व्यवहार आदि उत्तमोत्तम क्रियाओं से जीवन को यश-रूपी सुगन्ध से भर लें । सद्-क्रियाओं से युक्त परिवारों में बच्चों की बाल्यावस्था से ही श्रेष्ठ क्रिया-व्यवहारों में रुचि बन जाती है जिससे उनका प्रारम्भ से ही उत्तम स्वभाव हो जाता है । जैसे कर्म बड़े करते है वैसे ही कर्म उनकी सन्तान भी करने लग जाती है । परिवार में सभी को आपस में मधुर, सत्य एवं शान्तिदायक वचन बोलने चाहिये तथा सात्विक आहार, विचार और व्यवहारवाला सबको होना चाहिए ।

'पा रक्षणे' धातु से 'पिता' शब्द सिद्ध हुआ है । **'यः पाति सर्वान् स पिता'** अर्थात् जो अपने सन्तानों पर सदा कृपालु होकर उनकी उन्नति चाहता है, वह 'पिता' होता है । इस प्रकार माता-पिता आदि का मुख्य रूप से यही परम-धर्म या मुख्य-कर्तव्य है कि वे दीर्घकाल तक संयम, सदाचार एवं सद्व्यवहार पूर्वक अपने सन्तानों की रक्षा एवं उन्नति करें तथा स्वयं को परिवार व समाज के सम्मुख आदर्श बनायें ।

Events

Independence Day

On the occasion of our Independence Day, children from Arya families performed on 18th August at our Samaj

The Flag Hoisting done by Master Vitthal and Ravi Ochani ji

The National Anthem being sung and accompanied by Master Vitthal on the violin

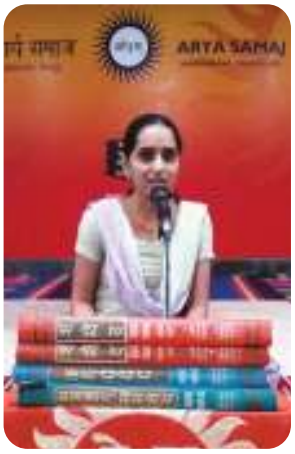

Anshul Dangi exhorting the audience to adopt Indian goods and reduce dependence on MNCs

Master Vitthal reciting a poem

Pravachans

Varun Dev ji

Smt Ved Kumari ji

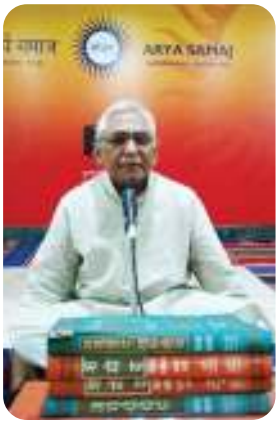

Dr. Mahesh Vidyalankar ji

Sh Krishnanand Saraswati ji

Sh Krishnamurthy ji

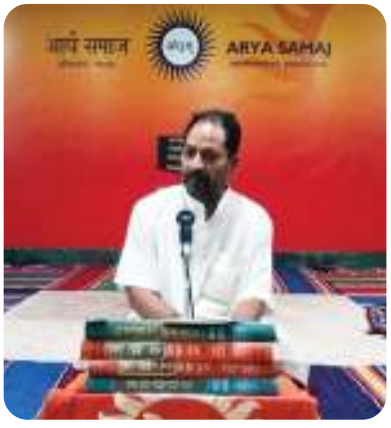

Acharya DevNarayan ji from Gujarat

Smt Suyasha Arya ji

VAIDIKOTSAV

Our samaj's Vaidikotsav was celebrated with great fervor on July 26th, 27th and 28th 2013. The festival featured pravachans by renowned Vedic scholar Dr Dharam Vir ji and Dr Mahesh Vidyalankar ji and melodious bhajans by Smt Hema Shah and her team. Some glimpses from the event….

Our President, Mrs Swatantra Lata Sharma welcoming all on Vaidikotsav

All the sessions started with Agnihotra. Featured here are the Yajman families - Shrikanth Arya ji & family, Swati Gupta ji & Family and Sandeep Mittal ji & family performing the Agnihotra

Smt Pratibha ji singing a bhajan

Smt Sneh Lata Rakhra ji singing a bhajan

Renowned Vedic Scholar Dr Dharam Vir ji engaged the audience with some thought provoking facts and ideas and exhorted people to look beyond their day-to-day routines

Smt Hema Shah and her team mesmerized the audience with some soul stirring melodious bhajans

Renowned Vedic scholar Dr Mahesh Vidyalankar ji enlightening the audience with his views

Children reciting the Sangathan Sookta

Dr Dharam Vir ji being felicitated by Sh Shrikant Arya ji

Dr Mahesh Vidyalankar ji being felicitated by Sh Sandeep Mittal ji

Smt Ved Kumari ji being felicitated by Smt Sneh Rakhra ji

Smt Pratibha ji being felicitated by Mataji

Smt Hema Shah ji and her team (Prabhat ji, Gaurav ji, Jharna ji, Madhavi ji) were felicitated by Smt Swatantra Lata Sharma, Smt Sneh Lata Rakhra, Smt Bhardwaj and Sh Ravi Ochani ji

The kids (Harshita, Varshita, Manasvini and Vansha) being felicitated by Mata ji

Sections of the audience during the Vaidikotsav

A Panoramic View of the audience during the Vaidikotsav

Think, Consume and Do Not Hoard

– Harsh Chawla

The thought provoking headline of the newspaper 'The Hindu' made me think about this issue, 'When you teach your children "A" for Apple, make sure they also learn not to waste the Apple'. Thankfully, the current generation does not have to worry about the shortage of food in their lifetime. But the coming one will face this inevitable problem. This makes it all the more necessary to stress the importance of not wasting food. So, before they find out that one in seven children in the world goes to bed hungry or that a third of the global food production is either wasted or lost, it is crucial that they learn to consume their food wisely. Keeping in tune with the theme 'Think, Eat and Save ', let's gift out children a good habit. Let us teach them not to waste what is on their plate. It should be their first lesson in table manners.

There are millions of children in the world who have known nothing but hunger. Please donate to those organizations who feed these precious yet deprived children. If we don't, who will? Let's pledge not to waste food. Make sure that the food goes into the belly and not into the bin. We all are brothers and sisters, the starvation and hunger of anybody on this earth affects us all. So save food, save life. The amount of food we throw away each year around the globe is sufficient to feed the world's nine hundred million hungry people.

Every grain of food is a resource of the earth. Unfortunately, we fail to realize this and this wastage is an enormous drain on natural resources and hence a negative environmental impact. So, let's decide not to waste any food in our homes and also that of our relatives and friends. All this done shows that we care for our fellow beings and we become worthy of life. It creates a sense of responsibility by contributing to society in this manner. Together we can make a difference; together we can abolish hunger and make life better for those who need. For every bit of food we waste, someone somewhere goes hungry. The day is not far off when people who suffer from hunger will pounce upon us to satisfy their urge for food to save their lives. It's a sin when food is hoarded and not shared. The same idea echoes in a sukta of the fourth chapter of 'Sankhya Darshan'. It tells how a hawk after satisfying its hunger and carrying the remaining food, is attacked and injured by other birds. It becomes free and comfortable only when it gives up the piece of meat. The sukta thus proving that partaking and sharing is good.

Similarly, thoughts and knowledge also need to be shared. It's symbiotic and universal. When parked and hoarded, it leads to stagnation. When I share, I grow. To whom I share helps him to grow also. Unless I put my views in open and let them be processed by others' thoughts too, I am living in a hole. Swami Dayanand Saraswati always encouraged a healthy discussion/debate. A discussion which does not start with the idea of - "I am right and you are wrong".

Movement is the essence of life. Undue accumulation of wealth or for that matter anything leads to imbalance. In history, we have seen the imbalance in wealth, power and information has led to many revolutions and historical catastrophies. Are we adding to such an imbalance once again?

How can I share? To whom can I share? What all can I share? What can I do alone?

Well, it starts with tiny drops from sky and they finally fill up the oceans.

Let us start with food and knowledge. We can either educate or be a catalyst in someone's education. We can feed or contribute to be part of such a movement and can create the same awareness in the coming generations.

I think what I eat, I want to enjoy what I eat but I do not want to hoard….I want to share.

कर्म-ज्ञान

हर व्यक्ति को जीवन में कुछ कर्म करना चाहिए,
पर कर्म से भी पूव उसका ज्ञान होना चाहिए ।
है कौन तू , क्या कर रहा, किस ओर तू है जा रहा,
इस बात का तुझको सटीक आभास होना चाहिए ।
आहार, निद्रा, भय सभी सामान्य पशु व्यवहार हैं,
निज - धर्म धारण कर दुःखों से निवृत्त होना चाहिए ।
धर्मयुक्त कामनाओं की पूर्ति करने के लिए,
बस धर्मयुक्त साधनों का प्रयोग होना चाहिए ।
अन्याय, पापाचार का विरोध करना आ जाएगा,
एक बार सत्य का आँचल पकड़कर चलना आना चाहिए ।
कर्मों के दोषों को केवल ज्ञान दूर करता है,
संकल्प-विकल्प शक्ति से कर्मों को पवित्र करना चाहिए ।
जब पास तेर हैं चित्त, कर्म और ज्ञानेद्रियाँ,
तो शुद्ध चिन्तन और मनन - निदिध्यासन होना चाहिए ।
प्रत्यक्ष क्या अनुमान क्या और आगम कहते है किसे,
बस सत्यमानी - सत्यवादी - सत्यकारी होना चाहिए ।
सत्य वचन का प्रयोजन प्राणियों का हित है केवल,
न सिद्ध हो तो मौन का अवलम्बन करना चाहिए ।
सत्यवादिता के अहं में पापोच्चारण हो जाया करता है,
अतः बोलने से पूर्व सर्वथा तोल लेना चाहिए ।
कर्म से अनुगत जीव परलोक में विचरता है अकेला,
उत्तम कर्म संग ले चलने का प्रबन्ध करना चाहिए ।
खान का हीरा बिन कसौटी शान पा सकता नहीं,
महाकुल प्रसूति के साथ स्व-करतूति भी चाहिए ।
है पत्ता-पत्ता उसकी सत्ता हर जगह उसकी महत्ता,
फिर क्यों मिलन को उसके कहीं और जाना चाहिए ।
क्या चित्र उसका है विचित्र लोचन से वो दिखता नहीं,
फिर ज्ञान चक्षु से वेदामृत पान करना चाहिए ।
वेद-वाणी ही समस्त वाणियों का मूल है,
वेद-वाणी की कीर्ति का कीर्तन होना चाहिए ।
वेद की धेनु कामनाओं का दोहन करती है,
हाँ, कामधेनु दोहने की युक्ति आनी चाहिए ।
उस सच्चिदानन्द भगवान को पर्दों में सजा रखा है,
ये अन्न, प्राण, मन, विज्ञान, आनन्द के पर्दों को
फाड़ना चाहिए ।
जब समस्त गुप्त-प्रकट सुखदायक पदार्थ दाता में हैं,
फिर क्यों न उसी एक का अवलम्बन करना चाहिए ।
हर व्यक्ति को जीवन में कुछ कर्म करना चाहिए,
पर कर्म से भी पूर्व उसका ज्ञान होना चाहिए ।

-निधि आर्या

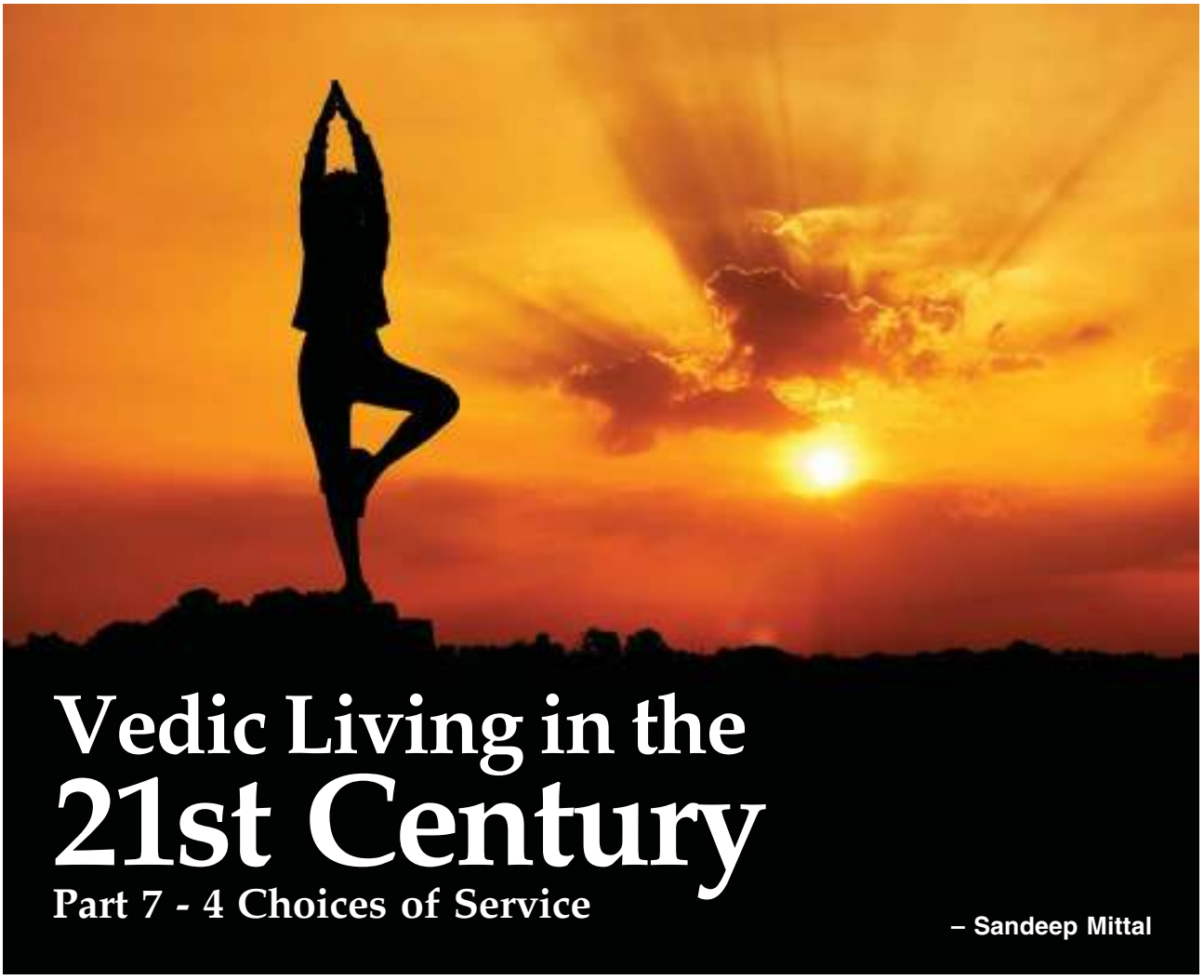

Vedic Living in the 21st Century

Part 7 - 4 Choices of Service

– Sandeep Mittal

This series of articles commenced from the Oct-Dec 2011 edition of VaidicDhwani wherein the need for a Vedic basis to current 21st century living was established. Further, methods to achieve such a living were listed and have been covered in the subsequent editions as follows:

1)	4 stages of life	-	Part 2 in Jan-Mar 2012 edition
2)	8 limbs of yoga	-	Part 3A & 3B in Apr-Jun & Jul-Sep 2012 edition
3)	3 organs of Dharma	-	Part 4 in Jan-Mar 2013 edition
4)	4 objectives of life	-	Part 5 in Apr-Jun 2013 edition
5)	5 daily sacrifices	-	Part 6 in Jul-Sep 2013 edition
6)	4 choices of service	-	In this edition
7)	16 sanskars in life	}	To be covered
8)	Positive politics		

4 CHOICES OF SERVICE

The Vedas (Rig 9.112.1) recognise there are natural differences in aptitude and capability of human beings. Hence four spheres of activity are prescribed which individuals can choose on their own free will. These four spheres are known as varnas and are - brahmana or intellectual, kshatriya or martial, vaishya or commercial and shudra or manual. It is to be noted there is no particular order to the listing of brahmana first and shudra last but just four different categories.

These varnas are not based on birth and is not

the caste system that is currently prevalent in India. Vedas prescribed varnas as a scientific division of skillsets which was chosen by individuals whereas castes are by birth, driven by a rigid society, that has been a scourge and scar on humanity … a bane of the nation. The Vedas are emphatic that merit and nature of each individual is the criteria and that birth is neither necessary nor inevitable as being the sole criteria.

According to varna vyavastha, all professions that humans can possibly adopt can be divided into four broad categories that are inter-related and inter-linked. There is no superiority or inferiority amongst them. Each varna is equally noble and serves the common good of society, the nation and the world. Vested interests have twisted and corrupted the interpretation of the Vedas. But there is no ambiguity in the Vedas. They are emphatically clear.

Rig 5.59.6 and 5.60.5 say, "These are without superiors, without inferiors, no middle ones either, they are mutually brothers, who from small beginnings, march onward in different ways, make progress, by dint of merit, for prosperity, they are all high born, they are all children of the eternally youthful, the soul protecting, grief alleviating God as father, the richly feeding, mother earth, produces happy days, in lovable ways, for these praiseworthy souls, in fair ways".

The Vedas have always advocated equality and belonging to any one of the four varnas - a brahmin, kshatriya, vaishya or shudra - makes no difference. All enjoy equal rights and respect. Even within the same family (Rig 9.112.3) the individuals could belong to different varnas. Four brothers in a family - each could belong to a different varna. Ironically, in the 21st century when great strides have been made in scientific thinking and rational temper, this is so hard to believe given the caste straitjacket. While four brothers can be scientist, armyman, businessman and contractor, by profession, the four cannot belong to different varnas or castes.

Further the Vedas (Atharva 3.30.6) prescribe common water reservoirs, common eating places, common places of worshipetc with no barriers between varnas.

It is only the irrational stupidity and superstitious rigidity of the caste system that has stood in the way of a free-flowing and common social life. It has played havoc with the unity of purpose of a nation. Thus, it can be safely said that Vedas recognise only one caste, the caste of humanity, and hence all the ills associated with the caste system have no recognition or sanction by the Vedas. Caste system is an invention of religious zealots and misguided elements that wanted to shackle society for their selfish motives. Thus even inter-caste marriage is a misnomer as marriage between a man and woman is a marriage between two humans and there is no 'inter' about it.

For a Vedic basis to 21st century living, the caste system must be uprooted and discarded both in practice and in the mindset. Instead we must embrace the Vedic concept which for each of the four varnas can be summarised as follows:

Brahmins (Rig Veda 7.103.8) are those with a pleasant attitude, non-violent in nature, with knowledge of the Vedas and spiritual processes, propagating the same to society, capable of performing sacrifices and undergoing severe penance. They are liberal intellectuals, unselfish by nature and enlightened with knowledge, using

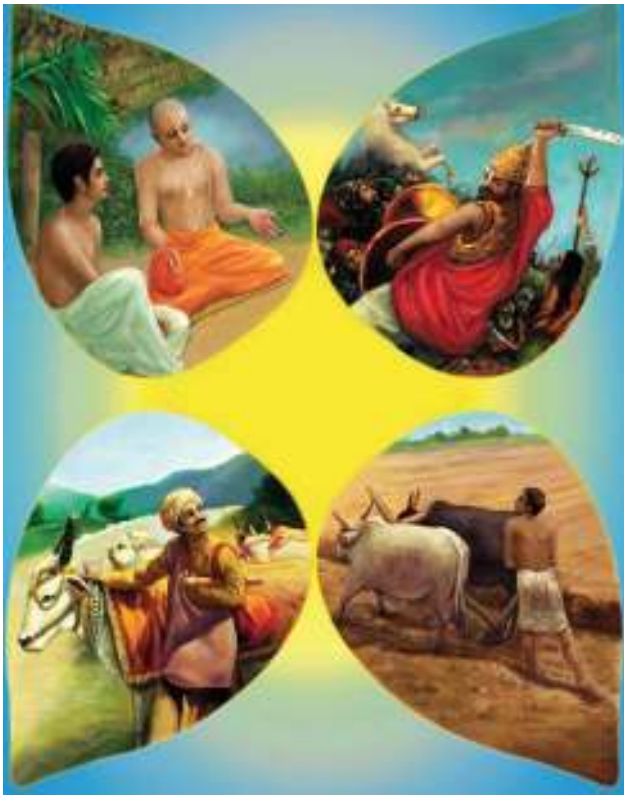

all of their acquired skillsets in the service of fellow beings.

Kshatriyas (Rig Veda 10.66.8) are those who display a spiritual basis to life, purity of character, erudite in political and administrative sciences, constant endeavour to uphold truth and justice, a sense of righteousness and above all, a comprehensive protection of subjects at all times of peace and war by the accomplishment of noble deeds.

Vaishyas (Atharva 3.15.1) are the affluent, men of commerce that guide society on the path of prosperity that crush miserliness and greed, they are both the creators and givers of wealth on which the entire society and nation stands. As we can see all around us, without economic might, a nation cannot sit on the global high table and hence the vaishyavarna plays this crucial role.

Shudras (Rig Veda 10.94.11) are bereft of high attachments and desire protection from others. They are untiring, indefatigable, unailing, rocklike strong and sturdy, undebilitated by old age, free from ambition and greed, performing manual labour. Society relies on their untiring selfless and sacrificial services and on their hard work it makes progress.

It would be best to conclude with interpretations of the following from the Vedas:

Yajur 18.48 says fill us with love towards brahmins, kshatriyas, vaishyas and shudras, awaken love in me with thy love o lord. Atharva 19.62.1 says endear me to the intellectual souls, make me a loved one amidst the people of martial valour, endear me to all those of the commercial community and manual workers.

It would not be out of the way to mention the etymology of shudra as "su asu dravati iti sudrah - suca dravatiti va" which means ‘he who is always swift and active is a shudra or he who moves with lustre born of unselfishness is a shudra’. So shudras deserve our respect and acceptance.

Whether countries are imperialist or capitalist, communist or socialist, theocracy or democracy, there will always be division of labour for efficiency of human capital that leads to progress and prosperity. The intellectual, martial, mercantile and manual classes will always co-exist in mutual harmony and respect across the world and this needs to be embraced by Indians with positivity and nobility. The Vedas are eternal and universal and in this 21st century it is necessary to draw sustenance from them to lead mankind from untruth to truth, darkness to light, mortality to eternal bliss.

(The author acknowledges with thanks and a deep sense of gratitude the content guidance from "Grace and Glory of Vedic Dharma" by Pandit Sudhakara Chaturvedi, a centenarian vedic scholar, published by Arya Samaj VVPuram, Bangalore)

Arya Samaj Indiranagar heartily thanks

M/s. Puliani & Puliani

(Legal and Commercial Booksellers)
Sujatha Complex, 1st Cross, Gandhinagar,
Bangalore 560 009
Phones 22254052 / 22265500

for sponsoring the printing of

VAIDIC DHWANI
A Quarterly Newsletter of Arya Samaj Indiranagar

Shri Yashpal Puliani

"So much has been given to me, I have no time to ponder over that which has been denied."

This is what Hellen Keller - the deaf, dumb and blind girl who rose to great heights in spite of the physical limitations had to say.

She even received a Bachelor's degree in Arts. She was a political activist, lecturer and above all, an inspiration to the whole world.

Some of her quotes are given below - Read and get inspired!

- "For three things I thank God every day in my life:
  - Thanks that He has vouchsafed to me knowledge of His works
  - Deep thanks that He has set in my darkness the lamp of faith
  - Deepest thanks that I have another life to look forward to - a life joyous with light and flowers and heavenly song"
- "When one door of happiness closes, another opens; but often we look so long at the closed door that we do not see the one which has been opened for us"
- "The best and most beautiful things in the world cannot be seen or even touched. They must be felt with the heart"
- "Keep your face to the Sun and you will never see the shadows"
- "Although the world is full of suffering, it is full also of the overcoming of it"
- "The most pathetic person in the world is someone who has sight but no vision"
- "Everything has its wonders, even darkness and silence, and I learn, whatever state I may be in, therein to be content"
- "What I am looking for is not out there, it is in me"
- "The best way out is always through"

……. Many More

ARYA SAMAJ INDIRANAGAR

MANDIR OFFICE BEARERS

PRESIDENT
Smt Swatantra Lata Sharma

SECRETARY
Sri Sandeep Mittal – sandeepmittal5@gmail.com

TREASURER
Sri Srikant Arya – shrikantarya@gmail.com

VICE PRESIDENT
Smt Harsh Chawla

JOINT SECRETARY
Smt Savita Agarwal
Sri Ravi Ochani

JOINT TREASURER
Sri Aseem Rawat

SYSTEMS INCHARGE
Sri Vivek Chawla

EDITOR
Smt Harsh Chawla

TRUST OFFICE BEARERS

PRESIDENT
Dr PC Manav

SECRETARY
Shri Vinay Poddar

TREASURER
Smt Sneh Lata Rakhra

ACKNOWLEDGEMENT

Vaidic Dhwani acknowledges with thanks the English & Hindi typesetting by Late Shri Om Prakash Ochani, Smt. Suyasha Arya, Smt. Nidhi Arya and the layout design by Shri Raghavendra T, AGM at Sandy Media

ARYA SAMAJ MANDIR
7 CMH Road, Indiranagar,
Bangalore 560 038
Phone 2525 7756
aryasamajbangalore@dataone.in
www.aryasamajbangalore.org

Like us @ www.facebook.com/asmiblr
Join our Facebook group - "Arya Samaj Indiranagar Bangalore" for regular updates

Vaidic Dhwani is a quarterly newsletter published by Shri Sandeep Mittal of Sandy Media and printing is contributed by M/s Puliani and Puliani, for and on behalf of ARYA SAMAJ MANDIR INDIRANAGAR (ASMI), mailed free of cost to members and interested individuals. It is for private circulation only.
To request a copy, simply mail us your complete postal address. *Vaidic Dhwani* is also available on the ASMI website **www.aryasamajbangalore.org**

Views expressed in the individual articles are those of the respective authors and not of ASMI. No part of this publication may be reproduced stored in a retrieval system, scanned or transmitted in any form or by any means electronic, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of ASMI.

SERVICES OFFERED

SAMAJ CONDUCTS AT MANDIR

- **Daily Havan** from 7.30 to 8.00 am
- **Weekly Satsang**
  comprising havan, bhajans and discourses every Sunday from 10 to 11.45 am. Every last Sunday of the month, the programme extends to special discourse and Preeti-bhoj.
- **Annual Festivals – Vaidikotsava and Varshikotsav**
  2-3 days programmes of havan, Bhajans and discourses on Vedic philosophy by renowned scholars are conducted twice a year.

SAMAJ CONDUCTS AT MANDIR OR YOUR VENUE

Namkaran & Annaprashan
- naming & first grain

Mundan & Upanayan
- head shaving & thread

Vivah - marriage with certificate valid in court of law

Griha Pravesh - house warming

Antyeshti - funeral rites

Shudhdhi - reversion from other faiths to Vaidic dharma with certificate valid in court of law

Havan - for any ceremony on any occassion, at any place

Contact
1) Smt Swantantra Lata Sharma 98803 94391
2) Pandit Brij Kishor Shastry 97410 12159
3) Pandit Arun Dev Sharma 98446 25085
4) Smt Harsh Chawla 98450 66520

YOGA & MEDITATION

- **Patanjali Yoga**
  of Swami Ramdev - 15 days free camp starts Second Sunday of every month
  Time : Mon to Sat - 6.15 - 7.30 am (Morning)
  Venue : Small Hall
  Smt Malati Kapoor 9686579916
  Smt Iravathi 98451 99904
  Sri G S Paranjyothi 93412 25893
- **Yoga** (Evening)
  Time : Every Mon/Tue/Thu/Fri - 7.00 - 8.30 pm
- **Pranayam**
  Time : Mon to Sat - 6.00 - 7.15 am (Morning)
  & 7.00 - 8.30 pm (Evening)
  Venue : Basement Hall
  Sri Nanjunde Gowda 98458 56204
- **Meditation**
  Manasa Light Age Foundation - Starting from first Wednesday of every month and every Wednesday
  Time : 7 - 8 pm
  Venue : Small Hall
  Sri K N Swaminathan 92431 16777
  Sri Pratap Gopalakrishnan 98800 80801

MUSIC

- **Vocal**
  Time : Sat & Sun 2 - 4 pm
  Smt Seethalakshmi 96200 56218
- **Sugama Sangeeth**
  Time : Mon & Fri 3 - 6 pm
  Smt Sarawathi Budhya 9481181220